व्दितीय अध्याय

से. रा. यात्री के आलोच्च उपन्यासों की कथावस्तु का अनुशीलन

उपन्यास यह हिंदी साहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा हैं । उपन्यास एक कल्पित लेकिन विशालकाय तथा गदयमयी आख्यान होता हैं, जिसमें मुख्य कथानक के अंतर्गत मनुष्य के यथार्थ जीवन का प्रतिनिधित्व करनेवालें पात्रों और उनके क्रिया -कलापों आदि का चित्रण होता हैं । उपन्यास मानव जीवन को प्रतिबिंबित करनेवाली कृति होने के कारण इसकी कथावस्तु और सारी घटनाएँ शृंखलाबध्द होती है, यही कथावस्तु की महत्त्वपूर्ण विशेषता हैं । उपन्यासकार को अपना उपन्यास लिखते समय उपन्यास जीवन की स्वाभाविकता तथा वास्तवता से परिपूर्ण हो इसका खयाल रखना आवश्यक हैं । साथ ही कथावस्तु के विकास के लिए घटनाओं मे विविधता होनी चाहिए । घटनाओ में वैविध्य होने के साथ ही सभी घटनाएँ, उपघटनाएँ इनका एक दूसरे से संबंध, उन घटनाओं में औचित्य भी निहायत जरुरी हैं । 'कथावस्तु' उपन्यास की नींव होती हैं । कथावस्तु से ही उपन्यास की सफलता, तथा सर्वोत्कृष्टता सिद्ध होती हैं । उपन्यास मानव जीवन का दर्पण होता हैं इसीलिए मानव के जीवन में घटित घटनाओं का वास्तव चित्रण उपन्यास में प्रतिबिंबित होना चाहिए । अनेक घटना, प्रसंग के बलबुते पर उपन्यास खडा रहता है, उन घटना प्रसंगो की शृंखला को कथावस्तु कहा जाता हैं ।

2. दराजों में बंद दस्तावेज —

से.रा. यात्री लिखित 'दराजों में बंद दस्तावेज' वर्णनात्मक शैली में लिखा हुआ उपन्यास, केवल दुखान्त प्रेमकहानी ही नहीं बल्कि इस उपन्यास में मानवी मन की उथल-पुथल भी हैं । भावनाओं की जटील महायात्रा की दिशा खोजने का महत्त्वपूर्ण प्रयास किया गया हैं । छोटी-छोटी घटनाओं का जाल पाठकों के मन में बुनने में यात्री सफल हुए हैं । लेखक यहाँ सच्ची अनुभूति को वास्तविक वातावरण का सहारा लेकर वर्तमान से प्रामाणिक रहते हुए एक नर्म दिल इन्सान के मन का प्रकटीकरण करने का साथ प्रयास करते हैं ।

प्रास्ताविक या पूर्वाभास से यह अनुमानित होता है कि लेखक महाशय हर साल

मसूरी जाते होंगे । वे इस साल भी मसूरी आये हैं । इस बार लेखक महाशय जनता होटल में ठहरे हुए हैं लेकिन वहाँ का अनुभव बहुत खराब था । होटल असुविधा से खचाखच भरा हुआ देखकर और उससे तंग आकर लेखक कॉटेज लेने की बात सोचते हैं । एक दलाल की सहायता से लेखक ने कैमील्स बैंक रोड पर स्थित एक कॉटेज देखी जो जल्द ही खंडहर में बदलनेवाली थी लेकिन जनता होटल का अनुभव देखकर लेखक ने वह कॉटेज उस दलाल से साफ करवा ली । कमरे का पुराना फर्निचर बाहर निकाल दिया और नया फर्निचर लगाया। केवल पुरानी मेज जो थी उसे मजदूर बाहर निकालते वक्त उस मेज के एक ड्रायर से कागजों का पुलिन्दा गिर पड़ा, उसे मजदूरों ने उठाकर बाहर सेहन में उछाल दिया । शाम को वह कागजों का पुलिंदा लेखक के हाथ लग गया । उसने उत्सुकतावश वह पुलिंदा उठाया और पढ़ने लगा । उस पुलिंदे पर लिखे हुए ब्यौरे के बारें में लेखक कहता, हैं — "अपनी और से भावों और भाषा में मैने कोई विशेष परिवर्तन नहीं किया है । केवल न पढ़े जा सकनेवाले शब्दों को अनुमान से बदल दिया हैं ।"[1]

पटना रहनेवाला परेश विश्वविद्यालय में प्राध्यापक हैं । हर साल की तरह इस बार भी वह कई दिन बिताने के लिए मसूरी आया है । 'कैमिल्स बैंक' रोड पर की कॉटेज में ठहर कर कमरे की खिड़की से बाहर के दृष्य देखता रहता है । एक दिन उसने देखा कि खिड़की के सामने, सडक के किनारे की बैंच पर एक युवती और वृध्दा बैठी हुई है । उस लड़की में कुछ ऐसा आकर्षण था जिससे परेश उसकी स्थिर निगाहों को अपलक देखता रहता । उस युवती के ऑखों की स्थिरता ने और खोयापनने ही परेश को उनके समीप जाने पर मज़बूर किया । इसी अजब-सी धून में परेश उनके पास जा पहुँचा मगर उन्होंने परेश की तरफ ध्यान ही नहीं दिया । तो खुद परेश ने उन्हें उसी बैंच पर थोड़ा हटने को कहा और वह वहाँ बैठा, फिर भी उन्होंने उसकी तरफ ध्यान नहीं दिया । दिन डूबने के बाद वे दोनों वहाँ से चली गयी । परेश ने उनके इस व्यवहार से आपने आपको तिरस्कृत और फालतु महसूस किया । परेश वहाँ से जाने के लिए उठा तो वहाँ उसे उनका छाता मिला । उस छाते को देखकर परेश का मन उल्हासित हो उठा । उसने सोचा, जब यह छाता लौटायगा तो उस लड़की का मुख कृतज्ञता से निखर उठेगा । मगर यह परेश के मन का भ्रम साबित हुआ । मात्र बुढिया ने उससे बातें करते-करते परेश की नौकरी, गाँव यहाँ तक की उसकी तनख्वाह भी पूछ ली । किन्तु संकोच के कारण लड़की ने कुछ बात नहीं की । परेश कहता हैं— "बुढिया के लिए यह सहज बात है कि वह बातचीत करते हुए किसी आदमी से अंतरंगना स्थापित करने के खयाल से उसके विषय में व्यक्तिगत सवाल

करें और लड़की ऐसे सवालों से घृणा करे ।"[2]

बातों-बातों से परेश को यह पता लगा कि वे दोनों लखनऊ से यहाँ आयी हैं । बातों का सिलसिला जारी ही रहता अगर वह लड़की बुढ़िया को न ले जाती । परेश समझ नहीं पा रहा था कि वह उन लोगों से इतनी घनिष्ठता क्यों बढ़ाना चाहता है ? उसे उन लोगों को देखे बिना चैन नहीं मिल रहा था । परेश उस युवती की भोली सुरत से पूरी तरह मोहित हो गया था, कि वह उन्हें विस्मृत नहीं कर सकता था । उनकी इस भेंट के कई दिनों बाद तक वह दोनों उसे कहीं दिखाई नहीं दिये । परेश उनकी प्रतिक्षा में खिड़की के पास खड़ा रहता । परेश की नजर हर जगह उनको खोजने का प्रयास करती थी । अपने इसी प्रयास अपने मन की झुंझलाहट को महसूस करते हुए उसने खुद को 'डैमफुल' कह दिया ।

कई दिनों बाद परेश को उस लड़की का खत मिला, जिसका नाम 'करुणा' था । उसकी मौसी बीमार पड़ गयी और वह मौसी परेश से मिलना चाहती थी । परेश शेरीविला पहुँचा । जहाँ वे दोनों रहती थी । शेरीविला के नंबर 9 के कमरे में मौसी लेटी झपकियाँ ले रही थी । परेश को आता देख लड़की ने उसे बैठने को कुर्सी दे दी । मौसी सप्ताह से बीमार थी और उसे अस्थेमा के दौरे पडते थे । परेश ने मौसी की देखभाल करने की जिम्मेदारी ले ली और काफ़ी तीमारदारी की तब करुणा का संकोच खत्म हो गया । करुणा परेश को नारी,कला, संस्कृति, साहित्य आदि पर अपने विचार खुलकर बताती । नारी की अव्यक्त देन पर करुणा के विचार थे —"नारी का जातीय तत्त्व तो बहुत मौन है, जिसे शायद कोई संज्ञा व्यक्त नहीं कर सकती।"[3] परेश हर रोज शेरीविला में जाकर करुणा और मौसी के साथ समय बिताने लगा । शुरु में जो संकोच करुणा और परेश दोनों में था धीरे-धीरे खत्म हो गया । घर के काम करने के साथ-साथ करुणा मौसी की देखभाल बड़ी तन्मयता से करती देखकर परेश के मन में करुणा के प्रति समादर पैदा हुआ । करुणा निकट रहते हुए भी सदैव एक दूरी बनायें रखती थी ।

एक दिन मौसी के कहने पर परेश और करुणा घुमने चले गये तब परेश ने उसके मौन के रहस्य को जानने की कोशिश की । बातों में करुणा से यह पता चला कि भरी दुनिया में मौसी के अलावा उसका कोई नहीं हैं । परेश उससे कुछ जानने की कोशिश करता तो करुणा उसे टाल जाती । करुणा को कम उम्र में गंभीर रहने को जिंदगी ने सिखा दिया था ।

उस दिन के बाद करुणा और परेश कई बार घुमने जाते । करुणा के व्यवहार में

सहजता दिखाई देती । वे एक दिन 'सीमेंन्ट्री' में घुमने चले जाते हैं, तो वहाँ कब्र पर लिखे उद्गार पढ़कर करुणा परेश से पूछती है कि उसने(परेश) किसी से प्यार किया है ? इस सवाल पर परेश 'चकित हो उठता है और समझाता है कि प्यार हृदय और उम्र का तकाज़ा है । परेश मन-ही-मन करुणा को चाहने लगता है । वह करुणा को सबकुछ देना चाहता है । करुणा दिन-ब-दिन खुश नजर आ रही है । उसके चेहरे की उदासी की जगह खुशी ने ले ली है ।

एक दिन परेश 'डोगीविला' पहुँचता है । किताब पढ़ने में मग्न करुणा को परेश के आने का एहसास होता है तो मौसी उसे चाय करने अंदर भेजती है । मौसी किसी बहाने से सुचित करती है कि रुपयों के अभाव के कारण वे मसूरी छोड़ने वाली है । तो परेश उन्हें पैसे देता है । मौसी को परेश से रुपये मांगते देखकर करुणा नाराज हो जाती है, लेकिन मौसी पर कोई असर नहीं पड़ता । उस शाम करुणा परेश के साथ घुमने नहीं जाती और मौसी ने भी उसे घुमने नहीं भेजा । यह बात परेश को बड़ी अजीब लगी । अपने आप पर इस बात का क्षोभ निकालते परेश वहाँ से जाने के लिए निकला तभी एक युवक परेश को ठकराया । उस युवक ने क्षमा मांगते हुए करुणा का पता परेश से पूछा ।

सड़क पर भरी बड़ी भीड़ के बीच खुश लोंगो की उपेक्षा करते परेश उस युवक के बारें में सोच रहा हैं क्योंकि इससे पहले उसने उस युवक को कभी नहीं देखा । उस युवक के बारें में परेश के मन में अनेकानेक विचार आने लगे । वह सोच रहा था कि मौसी ने करुणा को उसके साथ क्यों नहीं भेजा ? क्या उन्हें उस युवक का इंतजार था ? परेश इसी विचार में तेज भागा चल रहा था तभी एक लड़की ने मधुर आवाज में सैरीडोन या ऐस्प्रो की गोली की माँग की । उस वक्त परेश के मन में करुणा के उसके साथ घुमने न जाने के व्यवहार के लिए चीड़ थी क्योंकि परेश करुणा को सबकुछ देना चाहता हैं मगर करुणा लेने के लिए तैयार नहीं थी । इसीलिए जैकलीन द्वारा माँगी एक सैरीडोन की गोली के बदले खुद दुकान जाकर परेश कई गोलियाँ ला कर देता है । परेश का इस तरह गोलियाँ ला कर देने का कार्य उसकी असमर्थता के विरुध्द संघर्ष करने के खयाल से किया था । परेश को लगता है कि करुणा ने उसके साथ घुमने जाना पंसद नहीं किया, यहाँ तक कि उसे बैठने को भी न कहकर उसे तिरस्कृत किया । उसकी निष्ठूरता का प्रतिशोध परेश ने जैकलीन की मदद करके लिया । इसी क्षोभ भरी मनस्थिती में परेश जा रहा था, लेकिन उसके मन सें करुणा का खयाल नहीं जा रहा था । परेश करुणा को महत्त्वहीन साबित करना चाहता था मगर करुणा उसके अस्तित्त्व पर हावी होती चली गई,

इसी उलझन में परेश सो गया ।

अगले दिन परेश न चाह कर भी करुणा के यहाँ चला जाता है क्योंकि उसने आज मौसी को रुपये देने का वचन दिया था । खुद परेश भी करुणा को देखे बिना नहीं रह सकता था इसीलिए परेश रुपये लेकर करुणा के होटल पर पहुँचा । वहाँ जाकर मौसी को रुपये देते हुए करुणा की गंभीर मुद्रा को देखकर परेश वहाँ से जाने लगा तो मौसी ने उसे रोककर करुणा को चाय बनाने को कहा । चाय पीने के बाद मौसी किसी बहाने करुणा को परेश के साथ भेजना चाहती हैं, मगर करुणा इन्कार कर देती हैं । करुणा के इस निष्ठूर व्यवहार से परेश को लगा कि इन्सानों से ज्यादा दीवारें भी कभी-कभी रहमदिल साबित होती है । परेश करुणा के इन निष्ठूर व्यवहार से मायुस हो कर शराब पीने लगा ।

एक दिन करुणा उसके कॉटेज पर आ गयी । उसने परेश के कमरे का नक्शा बदल दिया । करुणा परेश को घर की और जिंदगी की अव्यवस्था को दूर करने के लिए स्थायी इंतजाम करने के लिए कहती है । परेश उसी की ओर इशारा करता है तो करुणा जिम्मेदारी उठाने से मुकर जाती है ।उस दिन शाम को घुमते वक्त करुणा परेश सें घनिष्ठता से पेश आती है । परेश के गले में बाहें डालकर बातें करती है किंतु करुणा के चेहरे पर वासना का हलका-सा संकेत भी नहीं है । करुणा परेश का प्यार पाना चाहती है मगर न खुद यह बात खुलकर बता सकी, न परेश । अचानक करुणा की आँखों में पानी देखकर परेश उसे प्रगाढ आलिंगन में कस लेता है । वापस आते वक्त करुणा परेश से कहती है कि वह एकदम भोला है ।

तीन-चार दिन बाद परेश शेंगीविला पहुँचा तो वहाँ एक मारवाडी आदमी मौसी से बेतकल्लुफी से बातें कर रहा था, और मौसी दीनता से जबाब दे रहीं थी । करुणा कुछ पढ़ने के बहाने से गंभीर मुद्रा में बैठी थी । तभी मौसी ने परेश को अंदर बुलाकर बैठने को कहा मगर घंटे भर किसी ने परेश की तरफ किसी ने ध्यान नहीं दिया । बाद में उस मारवाडी सज्जन ने कार्ड देकर मौसी को खाने की दावत दी तो मौसी ने बीमारी के बहाने करुणा को खाने के लिए भेजने का वादा किया । मौसी ने परेश को करुणा के साथ खाने पर भेजना चाहा । आज खुद करुणा ने परेश को घुमने के लिए चलने को कहा । परेश मौसी और करुणा के व्यवहार से हैरान है ।

वे दोनों घुमते-घुमते एक पेड के नीचे बैंठे तो करुणा परेश के कंधे पर सिर रखकर रोने लगती है । वह परेश से प्रार्थना करती है कि — "मैं बहुत अकेलापन महसूस करती है परेश बाबू !

आप मुझे यहाँ से कही बहुत दूर ले चलिए ।"[4] करुणा की मर्मान्तिक दृष्टि को देखकर परेश सिहर उठा । परेश ने कहा कि उसके साथ गुजरनेवाले थोडे से पल भी उसकी जिंदगी की अमुल्य धरोहर है तो करुणा के मुँह से वह बात निकल जाती है, जिसे वह छिपाना चाहती है । करुणा कहती है - "मैं बहुत गिरी हुई हुँ । जब मैं अपनी जिंदगी के बारें में सोचती हूँ तो घृणा से सिहर उठती हूँ । मुझे बस एक ही डर है - कहीं आप मेरी असलियत पहचान जाएँ, तो मेरी शक्ल से भी नफरत न करने लगे।"[5]

परेश करुणा के संकेत को नहीं जान पाता । करुणा परेश की जीवन संगिनी बनना चाहती थी, मगर उसे सूचित करने के बाद भी परेश उसके कहने का अर्थ नहीं समझ पाता है।

बातों-बातों में नाराज हो कर परेश करुणा को मिलने नहीं जाता । एक दिन वह करुणा का पत्र पाता है, जिसमें करुणा ने लिखा था - "आप को मौसी और मैंने धोखा दिया, परंतु आपने उस ओर कोई ध्यान नहीं दिया । मैंने इसका प्रायश्चित भी करना चाहा, आपके चरणों, में बिछ जाना चाहा, पर आपको मेरा समपर्ण भी नहीं भाया ।"[6]

करुणा लिखती है कि परेश उसके लिए एक सपना ही बनकर रह गया जो बेरहमी से टूट गया । करुणा परेश को उसके जीवन से अवगत कराते हुए लिखती है कि मौसी ने बचपन से उसका पोषण करने के साथ-साथ अब तक उसकी देह बचाई है । अब मौसी के शरीर को चलाना करुणा अपनी जिम्मेदारी समझती है । करुणा कहती है उसने परेश को सिर्फ इसीलिए दु:ख दिया ताकि परेश उसे छोड दें क्योकि करुणा अपने बीते हुए बुरे कल की वजह से अपने आप को परेश के काबिल नहीं समझती । करुणा जब भी परेश के साथ घर बसाने के सपने देखती तो उसका बीता कल उसके जहन में उभर उठता और करुणा अपने इरादे से हट जाती है । पत्र के अंत में करुणा परेश से माफी मांगती है । करुणा का पत्र पाकर परेश की आँखो के सामने अंधेरा छा जाता है । परेश पत्र पढ़कर बेहोश हो जाता है उसे वहाँ से अस्पताल भेजा जाता हैं ।

उपन्यास के अंत में परेश अस्पताल से वापस आकर उदासी में खिड़की से खाली बैंच की तरफ देख रहा है । सड़क के किनारे की वह खाली बैंच देखकर परेश को एक पंक्ति बार-बार याद आ रही है 'क्या भूलूं -क्या याद करु मैं ।'

निष्कर्ष —

'दराजों में बंद दस्तावेज उपन्यास में' यात्री ने कॉलगर्ल की मज़बूरी तथा उसकी मानसिकता को अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया है । कोई भी लड़की खुद कॉलगर्ल नहीं बनती, किसी मजबुरी की वजह से ही उसको ऐसा बनना पड़ता है । करुणा भी ऐसी ही मजबूरी का शिकार बनी है । करुणा भी आम लड़कियों की तरह घर-गृहस्थी के सपने देखती होगी, मगर अपनी मौसी का पोषण करने के लिए उसने मजबूरी में इस रास्ते को स्वीकार किया होगा । यहाँ देवेश ठाकूर के इसीलिए उपन्यास की याद आती है जिसकी नायिका 'मिनाक्षी' को भी कॉलगर्ल बनाने में समाज ही जिम्मेदार है ।

करुणा परेश के निरीह, निस्वार्थ प्रेम को देखकर उसकी जीवनसंगी बनना चाहती थी मगर वह अपना बीता हुआ कल नहीं भूल सकती । इसीलिए करुणा परेश जैसे नेक इन्सान को धोखा नहीं देना चाहती । परेश एक भावुक प्रेमी के रुप में पाठकों के सामने प्रस्तुत होता है । वह करुणा का अनेक अवसर मिलने पर भी फायदा नहीं उठाता । परेश करुणा के साथ जिंदगी बिताना चाहता है । मगर वह करुणा की असलियत नहीं जानता था । करुणा के खत से ही वह उसकी सचाई जानता है तो अनजाने में करुणा के समर्पण को स्वीकार न करने के एहसास में परेश बेहोश हो जाता है । उपन्यास का अन्त दु:खान्त है ।

इसी तरह उपन्यास में जीवन की जटीलता और विसंगतियों का चित्रण करने के साथ हमारे समाज में स्थित सामाजिक विकृतियों को उभारा है । यहाँ 'कॉलगर्ल' की महानगरीय जनजीवन की समस्या को प्रस्तुत करके समाज को दोषी ठहराया है । प्रतिकुल परिस्थिति की आँच में, कर्तव्य भावना की पीड़ा से करुणा का 'कॉलगर्ल' बनकर जिस्म का सौदा करना उचित ही है परंतु एक प्राध्यापक द्वारा उसका उद्धार होने पर भी इसका वह इन्कार करती है, इसमें करुणा की मानवीयता झलक उठती है । एक भोले-भाले प्रेमी को वह धोखा देकर उसके जीवन को उध्वस्त करना नहीं चाहती, इसीलिए अपनी असलियत का पता उसे खत द्वारा देती है । यहाँ करुणा कॉलगर्ल होते हुए भी उपेक्षित नहीं लगती है ।

इस उपन्यास में महानगरीय जीवन की भीड़भाड, अकेलापन, अभावग्रस्तता को उभारा है । इस उपन्यास में पत्र शैली, आत्मकथात्मक शैली उभर उठी है । कथ्य और शिल्प की दृष्टि से उपन्यास सफल है । उपन्यास का नायक भावुकता और आदर्शों से ग्रस्त लगता है । उसका असंतुलित युवती से किया गया प्रेम असफल बनने के कारण उसकी प्रेम काहानी दु:खान्त बनी है । इस उपन्यास में नायक-नायिका के मन की उथल-पुथल दर्शनीय है ।

इस उपन्यास में भावनाओं और विचारों का व्र्दव्द, पात्रों की संवेदनशीलता पठनीय है । परेश - करुणा के विरोधाभास से उनका संमिलन नहीं हो पाता है । वातावरण मसूरी का है जहाँ हमेशा सैलानीयों का नाता लगा रहता है । नायिका करुणा अकेलेपन की पीड़ा से पीड़ित है, गिरी हुई युवर्ती है, जिसे अपने जीवन पर घृणा उत्पन्न होती है । शहर के बड़े-बड़े सेठ उसका इस्तेमाल कॉलगर्ल के रुप में करते है । नायक परेश भावुक, संवेदनशील होने के नाते उसके जिस्म का फायदा उठाना नही चाहता है । करुणा को मौसी के खातिर अपने जिस्म सेठो के हाथों बेचना पड़ता है । इस स्थिति में परेश निरीहता उसे द्रवित करती है । करुणा मानवता से भरी है, वह कॉलगर्ल होने पर भी परेश को धोखा नहीं देना चाहती ।

इस उपन्यास में करुणा, जैकलीन, परेश, कलकत्ता का सेठ आदि बहुत ही कम पात्रों के माध्यम से उपन्यास की कथावस्तु विकसित हो चुकी है । यह पात्र यौनाकर्षण को अधिक महत्त्व देनेवाले है । परेश का यौनाकर्षण मात्र भोलेपन का निर्देशक है । उपन्यास का वातावरण मसूरी का है । मसूरी का जनता होटल, लेखक का किराये पर का कॉटेज, कैमील्स बँक रोड, सीमेंन्ट्री, लॅम्पपोस्ट, करुणा की कॉटेज, सेवाय होटल, मसूरी में स्थित इन स्थलों पर उपन्यास की कथावस्तु करवटें बदलती है । इन स्थलों के माध्यम से वातावरण में उभार आया है । इस उपन्यास की भाषा सहज, सरल, धारावाही, संमोहित करनेवाली है । इसमें वर्णनात्मक, आत्मकथनात्मक, पत्रशैली आदि शैलीयों के प्रयोग देखने को मिलते है । इस उपन्यास का उद्देश्य निरीह प्रेम करनेवाले प्रेमी परेश की भावुकता को दिखाना तथा ऐसे भावुक प्रेमी को कॉलगर्ल की व्यवसाय करनेवाली करुणा द्वारा धोखा न देने की मानवीयता को प्रस्तुत करना भी है । प्रेम सतर्कता से न करने पर प्रेम का अंत दु:खान्त होता है, इसे मध्यनज़र रखना इस उपन्यास का उद्देश्य है ।

2.2 बीच की दरार

1978 में यात्री का लिखा हुआ 'बीच की दरार' उपन्यास भावना प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित हुआ हैं । इस उपन्यास का आधार महानगरीय तथा उच्च शिक्षित पती-पत्नी के बीच के वैचारिक मतभेद, तनाव,विचारदृष्टि, आपसी ईर्ष्या, व्देष आदि है । नाटकीय परिस्थितियाँ तथा उलझे चरित्रों को सामने रखकर लेखक ने जीने की शर्तों का बुनियादी सवाल उठाया है । इस उपन्यास में सिर्फ तीन पात्र हैं । इस उपन्यास का नायक नागपाल

है, नीना नागपाल की पत्नी है, जो इस उपन्यास की नायिका हैं । नीना तथा नागपाल दोनों फिल्म इंडस्ट्रीज से जुड़े हुए कामयाब लोग हैं । इस उपन्यास में सिनेमाजगत के व्यक्तियो के जीवन में• आये उतार-चढ़ाओं को, उनके चरित्र के पहलुओं को, साथ ही उन्होंने अपने चेहरे पर चढ़ाएँ मुखौटो के पीछे उनकी वास्तविकता तथा व्यथा को यात्री ने सफलता से उजागर किया है । फिल्मी दुनियाँ की चकाचौंध के पीछे की जिंदगी और उसकी सच्चाई कितनी झूठी और बेबुनियाद होती हैं, इसकी तस्वीर को यहाँ प्रस्तुत किया गया है । इस उपन्यास के बारे में हिरे जी लिखते हैं—"फिल्मी दुनियाँ की बाहरी चमक-दमक के पीछे कितनी खोकली जिंदगी है, इसका अंकन रिपोर्ताज शैली में यात्रीजी नें किया है ।"[8] यात्री अपने उपन्यास की प्रस्तावना ही ऐसे वैशिष्टयपूर्ण ढंग से करते है, जिससे पाठक को जीवन की यथार्थता का अनुभव होता है और पाठक लेखक की बात पर विश्वास करने लगते है । 'बीच की दरार' यह उपन्यास अपनी भाषाशैली तथा वास्तविक कथ्य के कारण सुंदर बन पड़ा है । 'बीच की दरार' यह यात्री का लघुतम उपन्यास है । यात्री का यह उपन्यास लघु होने के कारण अपने आप में अपनी विषेषताओं के कारण सुंदर और बेजोड बन पड़ा है । लघु उपन्यास के बारे में डॉ. शांतिस्वरुप गुप्त कहते है— "जब उपन्यासकार जीवन के किसी अनुभव को संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करने लगे कि जीवन का वह खंड-चित्र-सूक्ष्माति-सूक्ष्म गहन अनुभुतियों के साथ साकार हो उठे, तभी लघुउपन्यास का जन्म होता है ।"[9] यात्री का यह उपन्यास लघु होने के बावजूद भी जीवन की वास्तविकता को उजागर करने में श्रेष्ठ बन पड़ा है। पर्सनल्टीज एक विख्यात पत्रिका है, जो हर कामयाब व्यक्ति के अन्तर्गत पहलुओं को समाज के सामने उपागर करती है । इस पत्रिका के माध्यम से संसार की उन हस्तियों के जीवन के अंतरंग तथा बाहरी जिंदगी के हर एक पहलु को समाज के सामने प्रस्तुत किया जाता है, जो किसी भी क्षेत्र में उच्चतम स्थान ग्रहण कर चुकी है । साधारण पाठक सिनेमा जगत की हस्तियों के जीवन से लालाईन हो उठते हैं किन्तु उन नकाबपोश हस्तियो की वास्तविक जिंदगी को समाज के सामने लाने का कार्य पर्सनल्टीज पत्रिका करती है । मि. मलिक इस पत्रिका के विशेष प्रतिनिधी हैं, जो किसी व्यक्ति के व्यक्तित्त्व का कोई भी कोना अछुता नहीं रहता । मि. ग्रेवाल जो इस पत्रिका के एडीटर है, वे मि. मलिक को फिल्मी दुनियाँ के अत्यंत प्रसिद्ध सिने-निर्देशक नागपाल का साक्षात्कार लेने की जिम्मेदारी सौंपते हैं ।

नागपाल फिल्मी दुनियाँ के जाने-माने तथा कामयाब और व्यस्त निर्देशक होने के साथ अपनी नीजी जिंदगी के बारे में जानकारी देने में महाकंजुष हैं । नागपाल न स्वयं

के बारे में न ही अपने परिवार के बारे में कुछ बताते है और न ही कभी किसी पत्रकार को अपने घर आमंत्रित करते है क्योंकि नागपाल यह बात जानता है कि किसी पत्रकार से मिलने से कोई भी बात 'खास' नहीं रहती है वह 'आम' हो जाती है । नागपाल का साक्षात्कार लेकर उसके वास्तव रुप को समाज के समाने लाने की जिम्मेदारी मलिक स्वयं उठाते है । नागपाल अत्यंत व्यस्त निर्देशक होने के कारण किसी एक जगह मिलना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन भी था । आखिर में कई महिनों की लगातार कोशिश के बाद मलिक एक अवसर पाते है, जब नागपाल शुटींग के दौरान महज कुछ मिनट की फुर्सत में भीड़ से अलग बैठे सिगार पी रहे थे कि मलिक बड़ी हिम्मत करके नागपाल के पास पहुँचते है । मलिक के इस अनाहत आ धमकने की वजह से नागपाल गुस्से से मलिक को उपेक्षित करने की संभावना थी फिर भी मलिक खतरा मोल लेकर उसके पास पहुँचते है और हिम्मत करके नागपाल को पूछते है कि क्या वे सच में इतने 'बिजी' हो सकते है कि व्यक्तिगत जीवन के लिए नागपाल के पास कोई समय नहीं है ? मलिक पूछता है क्या कोई भी आदमी इस दुनिया में ऐसा हो जो आपने आप में कम्प्लीट हो ? मलिक के इस सवाल पर कुछ जबाब देने से पहले उनका सेक्रेटरी बीच में आता है । सेक्रेटरी का काम होने के बाद फिर मलिक स्पष्ट रुप से नागपाल को पुछते है - "मैं आपके बारें में जानने को बहुत वक्त से क्युरियस हुँ कि क्या आप वाकई इतने मसरुफ है या यह एक लबादा आपने ओढ़ा हुआ है । आखिर वह क्या चीज हो सकती है जो आपको कभी अपने तई भीतर तक नहीं घुसने देती ।"[10]

मलिक के इस सवाल पर कुछ क्षण मौन रहने के बाद नागपाल मलिक का हेतु जानकर मलिक की इंटरव्यूव लेने की खासियत जानता है । स्वंय नागपाल मलिक को उसके नाम तथा उसकी अपनी खासियत भी जानता है तो मलिक को अचरज होता है । मलिक नागपाल को अचरज भरी निगाह से देखता है । नागपाल स्वयं के बारे में बताने लगता है । नागपाल कहता है कि उसकी स्वयं की भी यह इच्छा होती है कि लोग उनसें बाते करे और उसे स्वयं को थोडी देर के लिए इस व्यवहारी दुनिया से अलग ले जाये । साथ में यह खेद भी व्यक्त करता है कि कोई उसके व्यवहार से नाराज है क्योंकि दुनिया किसी भी आदमी के बड़े होने के बाद उससे मिलने में स्वयं कतराती है और फिर उसी आदमी को अपने मन से स्वयं मसरुफ बनाकर उसे उपेक्षित छोड़ देते है ।

बातों-बातों में नागपाल मलिक को अपने घर आमंत्रित करता है । इसी दौरान नागपाल के सेक्रेटरी को आता देख मलिक नागपाल से जाने की इजाजत लेकर शाम

को आने का वचन देकर चला जाता है । मलिक को अपने काम निपटाकर नागपाल के शुटींग लोकेशन पर जाने में बारिश की वजह से देर हो गयी । मलिक को आता देखकर नागपाल अपने सारे काम सेक्रेटरी पर सौंप कर मलिक को लेकर अपने घर की ओर रवाना हो गया । रास्ते में बारिश की वजह से चट्टान टूटने के कारण रुकना पड़ा तो नागपाल बेचैन हुआ क्योंकि नागपाल को यह चिंता थी कि कहीं उनके पहुँचने से पहले उसकी बेटियाँ सो न जायें नागपाल अपनी बेटियों से बहूत प्यार करता है । बच्चें मानो उसकी जिंदगी का स्वर्ग है । नागपाल के मन में कहीं अंदर एक ममतालु बाप भी है जो अपने व्यवसाय की उलझनों के बाबजूद यह कोशिश करता है कि बच्चों के सो जाने से पहले वह अपने घर पहुँचे ।

बातों के सिलसिले में नागपाल अपनी बीवी को किस तरह संभालकर रखा है, बताता है । नागपाल के इसी खयाल को स्पष्ट करते हुए हिरेजी बड़े लोगों का अपनी बीवी की तरफ देखने का नजरिया बताते है । हिरेजी कहते है—"कुछ लोग तो अपनी पत्नियो को भी इस तरह साज-संभालकर रखते हैं गोया वह कोई नुमाईश में रखनेवाली जिन्स हो ।"[11]

नागपाल अपनी वेयक्तिक तथा परिवारीक जिंदगी के बारें में खुलकर बातें करता है । अपनी कामयाबी के लिए नागपाल ने स्टुढिओज के फर्श झाडे, चौकीदार का, एक्स्ट्रा का काम किया था । नागपाल अपने फिल्म इंडस्ट्री के प्रवेश से लेकर आज की कामयाबी तक का सफर बताते हुए अपने दोस्त विनायक की दास्तान भी सुनाते है, जिसकी वजह से नागपाल को फिल्म इंडस्ट्री में प्रवेश मिला था । नागपाल पहले क्लर्क की नोकरी करता था । क्लर्क की नोकरी छूटने के बाद नागपाल और उनका दोस्त बेकार बने । रुखी - सुखी खाकर भी काम न मिलने के कारण वे जिंदगी से नाउम्मीद होने लगे थे तभी कमलादास नामक डायरेक्टर ने नागपाल को अपना अस्टिंट बनाया । इसके बाद नागपाल एक-के-बाद एक कामयाबी की सिढ़ी पार कर अंतिम शिखर पर पहुंचा और नागपाल एक प्रसिध्द सिने-निर्देशक के रुप में समाज के मस्तिष्क पर हावी हुआ ।

नागपाल अपनी जिंदगी की हर एक घटना मलिक को बताता है । मलिक इसी बीच नागपाल को उसकी पत्नी नीना के बारे में पूछता है कि वह एक प्रसिद्ध सिने-अभिनेत्री थी । नीना के अभिनयक्षम होने के बावजूद भी उसने फिल्मों में काम करना क्यों छोड दिया था ? मलिक के बार-बार पूछने पर नागपाल नीना के बारे में मौन रहता है । अचानक नागपाल नीना की बातें करता है । नागपाल यह जताने की कोशिश करता है कि मानों

नीना को घर से बच्चों से बढ़कर और कोई चीज नहीं है । घर में नागपाल नीना से मलिक की पहचान करा देते है । नीना और नागपाल के आपसी व्यवहार से यह स्पष्ट होता है कि वे दोनो एक-दूसरें से खुश नहीं है । वे दोनों एक दुसरे से उदास है किंतु वे खुश होने का आभास जताने की कोशिश करते हैं किन्तु उनका वास्तव रुप मलिक की नजरों से छिपा नहीं रहता ।

नीना से पहचान होने के बाद मलिक नीना को सफल पत्नी और गृहिणी की उपाधि देता है इसपर नीना को अपमान महसूस होता है । मलिक नीना के चेहरे से यह सही अनुमान लगाता है कि नीना अपने आप को नागपाल की बीवी होने के कारण कोसती है । नागपाल के बच्चों को मिलने के बाद नीना और मलिक बातें करते हैं । इसी समय किसी खास मीटिंग की वजह से नागपाल बाहर चला जाता है । नीना की इस उदास, विरान जिंदगी को हिरेजी अपने शब्दों में कहते है- "एक समय की प्रसिध्द अभिनेत्री जो आज लगभग गुमनामी के गर्त में समा गई थी, भीतर से वह बिखरी - टूटी और उदास लग रही थी ।"[12] नीना मलिक को नागपाल की सचाई बताती है । नागपाल के बाहर जाने के बाद नीना काफी शराब पिती है । नशा में नीना मलिक को उनके जिंदगी की 'खास' बातें भी बता देती है जो समाज के लिए अनजान है । तीन बच्चों के बाद भी नागपाल और नीना के 'बीच की दरार' बरकरार थी जिसे वे दुनियाँ को दिखाते नहीं है । नागपाल तथा नीना के विचार का नजरिया अलग-अलग है । नशा में नीना मलिक से कहती है कि नागपाल ने उससे महज एक दासी के रुप में शादी की है । नीना मलिक को अपनी बीती जिंदगी बताती है । नागपाल के पहले नीना की जिंदगी में विठोबा नामक पुरुष आया था जिससे नीना ने पहली शादी की थी । विठोबा ने नीना को फिल्मों में काम प्राप्त कराने के लिए जी तोड़ मेहनत और कोशिश की थी । नीना की सफलता देखकर विठोबा उससे शादी तो करता है । अंत में एक गुंड के साथ हुए झगडे में विठोबा की मौत होती है । कुछ दिनों बाद विठोबा से हुई नीना की बेटी भी मर जाती है ।

जिंदगी से त्रस्त हो कर नीना मुंबई आती है । मुंबई में संघर्षों के बाद नीना को नागपाल की फिल्म में काम करने का मौका मिलता है । फिल्म की कामयाबी के कारण नीना और नागपाल को प्रसिद्धि मिलती है । नागपाल नीना के रुप से मोहित हो कर उसके समक्ष शादी का प्रस्ताव रखता है । नीना भी नागपाल की प्रसिद्धि से प्रभावित हो कर, फिल्मी दुनिया की प्रसिद्धि देखकर उससे शादी करती है । अब नीना नागपाल से शादी

करने के अपने निर्णय पर पछता रही है । नागपाल से शादी करके नीना खुश नहीं है । नीना की इसी अवस्था का चित्रण करते हुए डॉ. हिरेजी लिखते है— "बाहर की दुनियाँ में बेहद कामयाब और प्रशंसा पानेवाले लोगों की बाहरी जिंदगी कभी-कभी नर्क से भी बत्तर होती है । इतिहास में अच्छी खासी जगह घेर कर बैठनेवाले भीतरी तौर पर यतीमों से भी गई-गुजरी जिंदगी जी लेते है ।"[13] नीना भी पती तथा बच्चो के होने के बाद भी एक कैदी की तरह अपनी जिंदगी जी रही है । नीना को नागपाल के जीवन में अपनी जगह एक खुबसूरत जेलखाने की कैदी सी लगती है । नीना को लगता है कि नागपाल ने अपना घर संभालने के लिए एक नौकरानी के रुप में तथा जिस्म की प्यास बुझाने के लिए ही नीना से शादी की है । नीना नागपाल का वास्तव रुप मलिक को बताती है । बाहर से भोला-भोला दिखाई देनेवाला नागपाल असली रुप में वहशी था । वह सिर्फ जिस्म का प्यासा था, जो आत्मा की गहराई तथा प्रेम की पवित्रता जाने बिना हर रात, नीना के जिस्म को मसलता,कुचलता हुआ अपनी हवस पुरी करता है । नागपाल असल रुप में वासनांध है, जिसे सिर्फ जिस्म की प्यास मालूम है । समाज में स्थित नागपाल जैसे लोग अपनी दिन की जिंदगी और रात की जिंदगी अलग-अलग ढंग से जीते है । इसी वास्तव को हिरेजी अपने शब्दों में कहते है "नागपाल जैसे असाधारण प्रतिभासंपन्न लोग अपनी घरेलु जिंदगी गंगाजल की तरह पवित्र और दुध जैसी उजली दिखाने के लिए बैचेन रहते है ।"[14] नीना मलिक के सामने अपनी मनोव्यथा प्रकट करती है । नीना इसी बात से दु:खी है कि नागपाल से शादी करने के बाद उसकी स्वयं की पहचान ही शेष नहीं रही । वह केवल नागपाल की पत्नी ही बन गयी । अपनी स्वयं की व्यथा को प्रकट करते हुए नीना कहती है "मैं साल -दरसाल बच्चें जनती रहूँ बिलकुल जानवर मादा की तरह और इसी बेवकूफी में खुश होती रहूँ कि मैं एक अति-प्रसिद्ध आदमी की बीवी हूँ ।"[15] नीना की व्यथा सुनकर मलिक नीना को नागपाल से तलाक लेने की सलाह देता है तो नीना कहती है कि इससे उसकी स्वयं की ही बनामी होगी क्योंकि नागपाल ने भलमानसाहत सब लोगों में रुपये बाटकर खरीदी है । नीना की नजर से नागपाल एक वहशी और वासनांध है तो नागपाल के अनुसार नारी-पुरुष के रिश्ते आपसी समझ के बिना कही-न-कहीं जाकर गड़बड़ाते हैं । बातों में नागपाल कहता हैं कि व्यक्तिगत जिंदगी का काम पर सीधा असर पड़ता है । जब-जब औरतें आर्थिकता की दृष्टि से आत्मनिर्भर हो गयी तब परिवार तड़क कर टूट गया है, इसीलिए नागपाल नहीं चाहता कि नीना फिल्मों में काम करे । उसने आज तक किसी भी पत्रकार के संमुख अपनी निजी जिंदगी को उजागर नहीं किया क्योंकि कहीं उनकी व्यक्तिगत जिंदगी

का, उनके 'बीच की दरार' का उसके काम पर गलत असर न हो ।

नागपाल जब मीटिंग से लौट आता है, उसके चेहरे पर यह डर दिखाई देता है कि कहीं नीना ने उसकी असलियत तो न बतायी हो ।

यात्री ने अपने इस 'बीच की दरार' उपन्यास में अत्यंत सुंदर ढंग से पति-पत्नी दोनों का अलग-अलग ढंग से साक्षात्कार किया है । क्योंकि किसी के व्यकितत्त्व को मुखर करने के लिए उन्हे अकेले में मिलना ही उचित है । हिरेजीलिखते है - "फ्रायर्डायन पद्धति का अवलंबन कर मि. मलिक ने नागपाल और नीना के जीवन के वे दबे ढके पहलू पकड़ लिये हैं, जिन्हें शायद वे भी पूरे रुप से नहीं जान सकते थे ।"[16]

यात्रीजी ने अपने 'बीच की दरार' उपन्यास से यह वास्तव समाज के चक्षूओं के समक्ष मुखरित किया है कि बाहर से अत्यंत सुखी, संपन्न नजर आनेवाले पति-पत्नी अपने भीतरी जीवन में अत्यंत दु:खी और खोकले होते हैं । यात्री ने इस उपन्यास में रिपोर्ताज शैली की सहायता से पात्रों के मुँह से ही बहुत कुछ कहलवाया है । इसी कारण यात्री का बीच की दरार यह उपन्यास लघु होने के बावजूद भी जानदार और अत्यंत सफल बन पड़ा है ।

निष्कर्ष :-

'बीच की दरार' उपन्यास में सिने-जगत की जानी-मानी हस्ती का वास्तविक चित्रण नागपाल को प्रतिनिधी बनाकर किया है । नागपाल अपना वास्तविक रुप समाज को पता न चले और समाज यूँ ही उसे महान मानता रहे इसीलिए अपनी व्यक्तिगत जिंदगी में किसी को भी दखलअंदाजी नहीं करने देता । नागपाल समाज के सामने सज्जन रुप में आता है किंतु उसका असली रुप उसकी पत्नी, इस उपन्यास नायिका 'नीना' ही जानती है । नागपाल के वासनांध, जुल्मी, वहशी रुप तथा संशयी स्वभाव के कारण नीना का व्यक्तित्त्व कुंठित बना है । नीना पुर्वायुष्य में प्रसिद्ध सिने तारका होने के बावजूद भी अपनी मजबूरियो के कारण नागपाल का जुल्म सहती रहती है । इस उपन्यास में यह स्पष्ट होता है कि उच्चवर्गीय आदमी अपनी असलियत छुपाकर अपने चेहरे पर नाटकीयता का, कृत्रिमता का लबादा ओढे कृत्रिम जिंदगी जीता तो है, किंतु भीतर से उनकी असली जिंदगी बड़ी-ही दर्दनाक और खोकली तथा घुटनजन्य होती है । फिल्मी दुनिया में किसी कलाकार की पर्देपर दिखाई देनेवाली जिंदगी और वास्तविक जिंदगी में काफी अंतर होता है । कलाकार

पर्देपर किरदार के माध्यम से दिखाया जाता है । नागपाल भी एक ऐसा किरदार है जो इस जगत के कुछ लोगों का प्रतिक बनकर उपस्थित होता है । नीना समाज की शिक्षित, आत्मनिर्भर नारी होंने पर भी पुरुष के हाथों का खिलोना बनकर गुमनामी में कैसे खो जाती है इसका प्रतीक पाठकों के समक्ष उभार दिया है । इस तरह इस उपन्यास में लेखक ने महानगरीय एवं उच्चवर्गीय पती-पत्नी के बीच की दरार को बड़े न्हदयग्राही ढंग से प्रस्तुत किया है ।

संक्षेप में इस उपन्यास में लेखक ने जीने की कला का प्रस्तुतीकरण प्रभावी ढंग से किया है । आँखें चकाचौंध करनेवाली फिल्मी दुनिया के अभिनेता की पारिवारिक स्थिति का घिनौनापन, घुटन यहाँ प्रभावी रुप में उभरी है । इस उपन्यास की विशेषता यह है कि रिपोर्ताज शैली में फिल्मी दुनियाँ की वैयक्तिक जिंदगी को कुरेदकर पाठको के समक्ष रखा है । फिल्मी अभिनेता-अभिनेत्री हमेशा पत्रकारों से दूर रहने का प्रयत्न करते है कि जिनके कारण उनकी असलियत का पता न चले परंतु यहाँ मि. मलिक के सिंकजे में मि. नागपाल और उसकी पत्नी नीना अटक जाती है और अपनी जिदंगी के नकाबो को खुला करते है । यहाँ मि. मलिक की चतुराई यह है कि वह इन दोनों की मुलाकातें मौका पाकर अलग-अलग रुप में लेता है । यहाँ फ्रायड की विचार धारा के आधार पर मि. मलिक ने नागपाल-नीना के जीवन के दबे पहलुओं को पकड़ने का प्रयत्न किया है ।

इस उपन्यास में नागपाल-नीना पति-पत्नी है । नागपाल प्रख्यात फिल्मी क्षेत्र का जाना -माना व्यक्ति है जिसके साथ अपने प्रथम पति विठोबा की मौत होने पर मजबूरी से प्रख्यात अभिनेत्री नीना विवाह करती है । परंतु अपने पति नागपाल की वासनांधता से , शंकाकुलता से, पीड़ित होकर घुटन अनुभव करने लगती है । नीना पर यहाँ पुरुष प्रधान संस्कृति हावी हो रही दिखाई है जिसके कारण नीना को अपनी अभिनय की दुनिया छोड़नी पडती है । अपने फिल्मी अभिनय के क्षेत्र से परे होने पर वह केवल मादा का जीवन यापन करके बच्चों की निर्मिति कर रही है, जिसका एहसास उसे खलने लगता है । एक प्रख्यात पति की पत्नी की जिंदगी कितनी दु:खद होती है, इस पर भी यहँ प्रकाश डालती है । अपने आस्तित्त्व पर आयी आँच से वह घायल हो चुकी है । इस व्यवस्था के प्रति वह चेतित होना चाहती है परंतु बाहय दबावों के कारण समाज के डर के कारण दबी रहती है । वह ऐसे घिनोने पति से तलाक लेने की बात पर बार-बार सोचती है परंतु भारतीय पुरुष प्रधान संस्कृति का सामाजिक दायरा उसे ऐसा करने से रोकता है । उसे सफल गृहिणी एवं पत्नी के रुप में मि. मलिक द्वारा दी गयी उपाधि खलती है । फिल्मी

दुनिया के डायरेक्टर नागपाल अपने वैयक्तिक जीवन में कितने गिरे हुए, टुटे हुए हैं इसका पता नीना के माध्यम से लगता है । यहाँ नीना के रुप में फिल्मी दुनिया में कॉलगर्ल के साथ संबंध स्थापित करने की स्थिति पर भी नागपाल के माध्यम से प्रकाश पडता है । फिल्मी दुनिया में विवाह संस्था का हुआ अवमुल्यन भी दिखाया है । नीना नागपाल की गृहस्थि को एक खुबसुरत बंदीखाना मानती है जहाँ वह कैदी की जिंदगी गुजारती है ।उसको उसकी पहचान दब जाना दु:खद लगता है । नागपाल की लोकप्रियता नीना को तलाक के लिए अवरोध लगती है । नागपाल के व्यक्तित्त्व के अनेक नकाब है, एक आदमी में अनेक आदमी वास करते है, जिससे नीना का व्यक्तित्त्व उध्वस्त हो चुका है ।

इस उपन्यास में नीना, नागपाल को छोंड़कर रिपोर्टर मि. मलिक, चीफ एडिटर मि.ग्रेवाल, डायरेक्टर कमलादास, विनायक, विठोबा आदि पात्र आये है । यहाँ डायरेक्टर कमलादास के कारण ही नागपाल अपना जीवन सफल बनाता है । नागपाल का बाहरी व्यावितत्त्व अंतरिक व्यक्तित्त्व के बिल्कुल विषमता रखता है । यहाँ नागपाल-नीना प्रमुख पात्र हैं बाकी पात्र गौण है ।

इस उपन्यास में महानगरीय वातावरण को उभरा है । फिल्मी दुनिया की चमक-दमक, कोजी कॉर्नर में स्थित 'नीना विला' की घुटन शुटिंग स्थळ, स्टुडिओं , अभिनेताओं की रंगतदार पार्टियाँ आदि का चित्रण वातावरणानुकुल के रुप में उभरा है । लेखक का उद्देश्य, फिल्मी दुनिया के बाह्य वातावरण की अपेक्षा फिल्मी कलाकारों की पारिवारिक या अंदरुनी स्थिति को उकेरना है ।

इस उपन्यास में फिल्मी दुनिया की बाहरी चमक-दमक के साथ कलाकारों की खोखली जिंदगी, बादह से अत्यंत सुखी एवं संपन्न नजर आनेवाले पति-पत्नी के बीच की दरार, लगन के साथ काम करने पर फिल्मी क्षेत्र में होनेवाली तरक्की, विवाह के बाद फिल्मी अभिनेत्रियों की उध्वस्त होनेवाली जिंदगी, फिल्मी दुनिया के डायरेक्टरों की निजी जिंदगी में होनेवाली गिरावट, फिल्मी कलाकारों की दिन में एक और रात में एक होने वाली जिंदगी, फिल्मीक्षेत्र में कॉलगर्ल का सिलसिला, कलाकारों का दोहरा व्यक्तित्त्व, विख्यात व्यक्ति से होनेवाले विवाह पर अभिनेत्रियों के नाम की पहचान में होनेवाली गिरावट, नारी-पुरुष के रिश्तों की सफलता के लिए आपसी समझ की आवश्यकता आदि कई उद्देश्य उभर उठे है । एक अनजानी, अनपहचानी, अछूती फिल्मी दुनिया के कलाकारों की वैयक्तिक जिंदगी से लेखक ने पाठकों को परिचित कराया है ।

भाषा शैली की दृष्टि से यदि देखा जाय तो इस उपन्यास की भाषा पात्रानुकूल है। बीच-बीच में अनेक अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हुआ है । फिल्मी-दुनिया से संबंधित अंग्रेजी शब्दो का निर्माण वातावरणानुकूल हुआ है । उर्दु, संस्कृत के शब्द भी आये हैं । रिपोर्ताज शैली, आत्मकथनात्मक शैली, वर्णनात्मक शैली आदि के दर्शन होते है । शिल्प की दृष्टि से यह उपन्यास सफल लगता है । इस उपन्यास में फ्रायडियन पध्दति का इस्तेमाल किया है । यह उपन्यास दांम्पत्य जीवन के बीच की दरारों से पाठकों को अवगत कराता है । यहाँ दांपत्यजीवन के तनाव, स्त्री संस्कृति पर हावी वाली पुरुष-प्रधान संस्कृति का पता चलता है ।

सुबह की तलाश

से.रा.यात्री लिखित 'सुबह की तलाश' यह उपन्यास वर्तमान जीवन की रोजमर्रा की बेरोज़गारी की समस्या पर प्रकाश डालता है । उपन्यास का नायक-सतीश एक उच्चशिक्षित किंतु बेकार युवक है । सतीश अपनी रोज़ी-रोटी के लिए दर-दर भटकता है । उसें कहीं भी अपने पाँव जमाने का उचित अवसर नहीं मिलता । उच्चशिक्षित तथा सर्वयोग्य होने के बावजूद भी नौकरी न मिलने की वजह से उसे रहने का ठिकाना भी नहीं मिलता, इन कारणों से नैराश्य में डूबा सतीश किसी तरह आवास की समस्या तथा आर्थिक दुर्बलता के बीच अपने जीवन को घसीटता जी रहा है ।

बहुत संघर्ष के बाद सतीश नौकरी पाने की अपनी लगातार कोशिश में कामयाब होता है । अपनी योग्यता के बदौलत नौकरी पाने के साथ-साथ स्वयं के कर्तृत्व से 'मूकप्राणी सेवासदन' की स्थापना करके स्वयं को अपंगो की सेवा करने के लिए समर्पित करता है ।

नायक-सतीश अपने दोस्त की बहन-बीना से बेहद प्यार करता है किन्तु अपने मन की बात कभी उससे नहीं कहता । जब बीना की शादी किसी कारण टूट जाती है तो सतीश अपने मित्र की सहायता से बीना से शादी करता है । शादी के बाद सतीश बीना को लेकर स्वयंद्वारा स्थापन की हुई मूक प्राणी सेवा सदन संस्था में जा कर अपनी गृहस्थी शुरु करता है ।

उपन्यास के अंत में लेखक ने सतीश और बीना को भी अपना संपूर्ण जीवन अपंगो की सेवा करने के लिए समर्पित करते दिखाया है ।

13659

कथावस्तु —

उपन्यास का नायक सतीश एक बेकार युवक है । प्रारंभ में उसे एक नौकरी प्राप्त हो गयी थी परंतू वहाँ तनखा न मिलने के कारण वह स्वंय नौकरी छोड देता है । नौकरी छोड़ने के बाद वह घर जाने में शर्म महसूस करता है क्योकि उसकी परिवारिक हालत अच्छी नहीं थी । नौकरी न होने के कारण वह घर में सौतेली माँ तथा पिता को रुपयें भेजने में असमर्थ रहा इसीलिए चाह कर भी सतीश घर नहीं जा सका ।

सतीश अपने बचपन के मित्र राकेश के घर में पनाह लेता है । राकेश एक ऑडिटर है । घर में राकेश के न होने के कारण सतीश अपना सामान राकेश के घर में रखकर चला जाता है । राकेश के न होते हुए उसके घर में रहना उचित न मानकर सतीश दो-तीन बाहर रहता है । तीन दिन के बाद सतीश जब घर आता है तो उसे पता चलता है कि राकेश की छोटी बहन बीना को लडकेवाले देखने आनेवाले है । घर के मेहमानों के साथ सतीश गप्पे मारता है । सतीश की मामूली-सी नौकरी के बारे में परिवार के सदस्यों के बड़े-बड़े मनसुबे सुन कर सतीश उस कोठी में जाता है, जहाँ उसने अपना बस्तान जमाया है । दूसरे दिन लड़की दिखाने की रस्म पूरी होने के बाद लड़केवाले शादी के लिए हाँ कहकर जाते है । लड़केवाले जाने के बाद बीना सतीश को खाना खाने बुलाने जाती है तो सतीश बीना को मजाक से दर्शनीय चीज कहता है । सतीश बीना को उसकी पसंद पूछता है, तो बीना के जबाब से नाराजी झलकती है । बीना को अपनी ऐसी संस्कृति से चीड़ थी जहाँ इस तरह किसी के सामने लड़कियों की नुमाईश की जायें । लड़की दिखाने की प्रथा पर व्यंग्य करते हुए बीना कहती है— "अपना देश कितना महान है और कितनी उत्कृष्ट परांपराओं से विभुषित है कि जहाँ औरतें नुमाईश की चीजें होती है ।"[17] सतीश राकेश के परिवार का सदस्य बना है । राकेश की अनुपस्थिति में सतीश पूरा खयाल राकेश की छोटी बहन बीना ही रखती है । यहाँ तक कि सतीश को मुलाकात के लिए जाने को रुपये भी देती है ।

एक दिन सतीश से रास्ते में उसकी पूरानी सहपाठी बिंदू मिलती है, जो एक रिसेप्शनिस्ट की नौकरी करती है । बिंदू सतीश को अपने ऑफिस ले जा कर उसकी खातिदारी करती है । बिंदू सतीश को किसी एक तगह पर स्थिरता से नौकरी करने की सलाह देती है तो सतीश उसे कहता है— "किस बात में स्थायित्त्व खोजूँ ? आज सारे मानदंड बदल चुके हैं । सारी चीजो और रिश्तों का आधार आर्थिक हो गया है । सिर के उपर छत चाहनेवाला और पेट के निमित्त रोटी की कामना करनेवाला कभी इतनी नग्नता से पीड़ित नहीं हुआ

जैसा कि आज देखने में आ रहा है । नैतिकता और संकोच, छीन झपट और आपाधापी के नीचे पीस कर दम तोड़ चुके है ।"[18] चाय पीन के बाद सतीश बिंदू से इजाजत लेकर निकल पड़ता । चलने के कारण थकान की वजह सतीश एक पार्क में बैठता है तो उसकी आँख लगती है । आँख की खुमारी चिड़ियों के चहकने से निकल जाती है । वह घर लौटता है । घर में सतीश बीना का काफी मज़ाक उड़ाता है । राकेश के पिता सतीश की पहचान लड़के वालों ने 'हमारा बेटा' कहकर कराते है । सतीश बीना को कहता है कि शादी के बाद तो वह ससूराल में शासन करेगी क्यों कि लड़के वालों ने तुम्हें खूब पसंद किया है । तो बीना जवाब में कहती है— "मै किसी को पसंद आ जाँऊ क्या यहीं काफ़ी है मेरी पसंद या नापसंद का कोई अर्थ नहीं है ?"[19] बीना के इस बात से सतीश कई प्रश्नो के उलझन में लेटा रहता है । अगली सुबह जल्दी उठकर सतीश घुमने जाता है । कुछ न सूझने के कारण सतीश बिंदू के घर जाता है । घर में बिंदू सतीश को घर में बिठाकर किसी इंटरव्यूव के लिए चली जाती है । घर में बिंदू की मुँहबोली बहुन रज्जो यानी रजनी है । सतीश रज्जो से बाते करता है । बिंदू के घर में न होने के कारण रज्जो सतीश का खयाल रखती है । रज्जो की निष्कपटता और सेवापरायणता देखकर सतीश को बीना की याद आती है । दूसरे दिन सतीश राकेश के घर जाता है । घर में सतीश को राकेश के लौटने की खबर मिलती है । बीना सतीश को एक खत लाकर देती है, जो दहरादून के मिशनरी स्कूल के प्रिन्सिपल का था, जिन्होंने सतीश को मिलने के लिए बुलाया था । सतीश बीना को बताता है कि स्कूल में एक मूक और बधिर बच्चों की मिशनरी संस्था है । बीना खत पढ़कर सतीश को देहरादून जाने को कहकर कहती है कि यहीं असली काम और यहीं 'सच्ची सेवा' है । सतीश को अपने कमरे में जाने के बाद दिखाई देता है कि बीना ने सब मैले शर्ट और पतलून धो कर इस्तरी करके रखे है । सतीश की आँखों से आँसू बहते हैं क्योंकि एक बीना ही है जो उसका इतना खयाल रखती है । सतीश राकेश को नौकरी के खत के बारें में बताता है तो राकेश उसे मूक-बधीर स्कूल की नौकरी करने की सलाह देता है । सतीश और राकेश बीना के बारें में बातें करते है । सतीश राकेश को कहता है कि लड़का एकदम फर्स्टकलास है । बीना वहाँ खुश रहेगी । परंतु राकेश को बीना की शादी के दहेज के बारें में चिंतित देखकर सतीश राकेश को समझाता है कि बीना पढ़ी -लिखी है, अगर वह नौकरी करेगी तो उसी घर के लिए ही कमायेगी । तभी राकेश कहता है — "अरे भाई लड़केवाले इस तरह से कहाँ सोचते है ? उनके लिए लड़की का कोई भी गुण गिनती में नही आता । जब तक मोटा दहेज न

मिले और फिर निरंतर किस्तों में मिलता चला जाय तो बेटा ब्याहने का लाभ ही क्या हुआ ?"[20] राकेश की व्यथा से समाज का वास्तव रुप उजागर होता है क्योकि आज-कल लड़की कितनी भी गुणवान और सुशिक्षित हो लड़केवाले बिना दहेज माँगे रहते नहीं है । लड़की को रुपया लाने की मशिन ही समझा जाता है, उसके गुणो कीं कदर नहीं की जाती ।

दूसरे दिन सतीश देहरादून चला जाता है । एक होटल में ठहरकर फादर थोरोमन को फोन करता है । फोन पर सतीश को पाँच बजे आने को कहाँ जाता है । सतीश थोडा आराम करने के बाद तैय्यार हो कर आर्कलैन्ड इस्टेट पहुँचता है, जहाँ मिशनरी स्कूल है । स्कूल का नाम 'मर्सी शेल्टर' है । वहाँ पहुँचने पर सतीश को पता चलता है कि फादर थोरोमन कुछ देर बाद मिलेंगे ।मिशनरी स्कूल में सतीश के हमउम्र कई युवक-युवतियाँ आयी थी । वे आपस में बातें करने ही लगे थे तभी फादर थोरोमन आते हैं । फादर की आँखों से मासुमियत की शितल किरणे फूटती प्रतीत होती है । फादर आवेदकों को मर्सी शेल्टर घूम फिरकर देखने को कहते हैं । मर्सी शेल्टर में मूक-बधिर बच्चो के निष्पाप चेहरे देखकर सतीश यह तय करता है कि यदि अवसर मिला तो वह यहीं रह कर इन बच्चो की सेवा करेगा ।

मर्सी शेल्टर घुमने के बाद फादर सभी आवेदकों को न बोल सकनेवाले और श्रव्य संवादो से अपरिचित बच्चो के बारे में उनके विचार व्यक्त करने को कहते है । फादर थोरोमन सतीश के विचारों से प्रभावित होते हैं । फादर सतीश को खाने के बाद रुकने के लिए कहते हैं । फादर सभी आवेदकों में से सतीश को नोकरी के योग्य समझते हुए सतीश को उसकी सुविधा के अनुसार आने का निमंत्रण दे कर विदा करते हैं ।

सतीश देहरादून से लौटकर दिल्ली पहुँचता है । सतीश राकेश को बताता है कि मिशनरी स्कूल में किसी महान उद्देश्य की पूर्ति करने हेतु ही रहा जा सकता है । वह नौकरी नहीं तो बिना किसी लोभ के मूक-बधिरों की सेवा करने का महान कार्य करना होगा । सतीश से देहरादून की नौकरी का स्वरुप सुनकर राकेश सतीश को देहरादून न जाने की सलाह देता है । उसी शाम राकेश, सतीश और बीना खरीदारी करने जाते हैं । सतीश बीना की पसंद से उसे साडी खरीदता है किंतु सतीश को यह सच बताने की हिम्मत नहीं होती कि वह साड़ी उसने उसी के लिए खरीदी है । सतीश बीना से बेहद प्यार करता है किंन्तु सतीश राकेश के घरवालों के दामाद के बारे में बड़े -बड़े मनसूबे देख कर वह चूप रहता है, बीना के प्रति अपना प्यार कभी प्रकट नहीं करता । सतीश अपनी आर्थिक स्थिति

के कारण अपने प्यार का इजहार न करते हुए मन-ही-मन में बीना को चाहता है ।

सतीश का पूरा खयाल तथा उसकी मानसिकता को बीना ही अच्छी तरह से जानती थी । जिंदगी में आये कठिण प्रसंगों से लड़ने के लिए सतीश का हौसला बढ़ाती है । सतीश तो खुद परिस्थितियों के सामने एक मूक-बधिर की तरह लाचार है और मानो बीना ही उसके लिए आश्रयदाता और अन्नदाता है । यात्री लिखते है— "सतीश के लिए उस घर में बीना ही मर्सी शेल्टर बनी हुई थी ।"[21]

खरीदारी के बाद वे तीनों घर लौटते है । घर में राकेश के पिता-शिवप्रसाद बताते हैं कि उनके बड़े दामाद के परिचित बाजोरिया सेठ के जमुनानगर के कारखाने में एक आदमी की जरुरत है । शिवप्रसाद सतीश को यह नौकरी हासिल करने की नेक सलाह देते हैं । पहले तो राकेश इस कारखानेवाली नौकरी से नाराज था। राकेश चाहता था कि सतीश किसी स्कूल - कॉलेज में पढ़ायें । तब शिवप्रसाद राकेश की बात पर खफ़ा हो कर राकेश को इस बात से परिचित कराते हैं कि आज गुणों को या प्रतिभा को कोई नहीं पूछता, यहाँ सिर्फ पैसा बोलता है । वे कहते है— "तेरी तो बहुत बड़े - बड़ो से पहचान है फिर ऐसी कोशिश कर कि इसे अमरिका या जर्मनी - वर्मनी जाने का मौका मिल जाये । प्रतिभा की पुछ तो उन्ही मुल्को में है । यहाँ तो सारे धान बाईस पसेरी है ।"[22] पिताजी के समझाने पर राकेश सतीश को जमुनानगर भेजने के लिए तैयार हो जाता है । राकेश के पिता अपने दामाद को फोन करते है। शिवप्रसादजी का दामाद सतीश को आज ही भेजने को कहता है । सतीश उसी रात जमुनानगर के लिए निकल पड़ता है। न जाने क्यों सतीश के जाने के बाद बीना उदास हो जाती है । बीना को सतीश की कमी महसूस होती है । सारा घर सूना-सूना लगता है । बीना को लगता है कि उसका ही कुछ हिस्सा छूट गया है । बीना को सतीश का जाना अच्छा नहीं लगता है । बीना पूरी रात करवटें बदलती रहती है ।

चंदीगड के उपनगर जमुनानगर पहुँचकर सतीश बाजोरिया सेठ के मैनेजर से मिलने जाता है किंतु उसकी मुलाकात नहीं होती । सतीश को सेठ के गेस्ट हाउस में ठहराया जाता है । उसका मन अज़ीब-सी झुंझलाहट से भरा हुआ है । बीना का मधूर और दयालु व्यवहार उसके अंतर्मन में आवाज दे रहा था । बीना की शादी तय हुई है यह जानते हुए भी सतीश बीना को भूल नहीं सकता । "मनुष्य का मन भी अनोखी पहेली है । जितना ही वर्जित की और से इसे हटाने का प्रयास किया जाता है, यह उतने ही वेग और प्रभाव से उधर भागता है ।"[23] सतीश बीना की याद से छटपटाता है । बीना की याद में उसे भूख का

भी एहसास नहीं होता । सतीश सारी रात सो नहीं पाता । पूरी रात बीना के साथ गुजरे पलों को याद करता है ।

दूसरे दिन मैनेजर की गाड़ी सतीश को लेने आती है । मि. सूरी बाजोरिया सेठ के कारखाने के मैनेजर है । मि. सुरी से मिलने के बाद सतीश जान जाता है कि बाजोरिया सेठ के कई कारखानों के अलावा कई स्कूल, कॉलेज भी है । उन्ही संस्थाओं के काम के लिए उन्हें एक समायोजक की जरुरत है । सतीश का नम्र व्यवहार देखकर सूरी यह विश्वास दिखाते है कि सतीश इस जॉब के लिए सही होगा । सतीश मैनेजर को इस तरह के कामों का अनुभव न होने की सच्चाई बताता है तो मैनेजर बड़ा मार्मिक जबाब देते है— "उससे क्या हुआ ? अनुभव तो कोई लेकर पैद नहीं होता एक्सपीरियेंस तो होते होते ही होते है ।"[24]

मि. सूरी सतीश को बताते है कि बाजोरिया सेठ, सभी सीनियर स्टाफ, प्रिन्सिपल और खास लोगों के साथ ही सतीश से मुलाकात करेंगे । सतीश को सेठ की तरफ से रहने के साथ कई सुविधाएँ उपलब्ध कर दी थी किंतु सतीश बिना किसी प्रलोभन में आये गेस्ट हाऊस में रहना पसंद करता है ।

पाँच बजे सतीश मीटिंग हॉल पहुँचता है । सभी के साथ सतीश का परिचय करवाया जाता है । बाजोरिया सेठ सभी को अपनी संस्थोओं के को-ऑर्डिनेटर के रुप सतीश को नियुक्त करने की घोषणा कर देते है । वहाँ उपस्थित बुर्जुगों को लगता है कि सतीश बोल नहीं पायेगा, बोलते वक्त गड़बडा जायेगा और सब के सामने तमाशा बनेगा लेकिन जब सतीश बोलने लगता है तो सब हक्का बक्का रह जाते है । बातों-बातों में सतीश बताता है कि— "मुझे कॅरियर नहीं बल्कि अर्थ चाहिए-जिससे जीवन का अर्थ पकड में आये ।"[25] सतीश अपने वक्तव्य से सब को प्रभवित करता है । उससे और उसके व्यवहार से बड़े-बूढ़े भी उसका आदर करने लगते है ।

मीटिंग के बाद सतीश को उसका ऑफिस दिखाया जाता है । कुछ दिन बाद सतीश अपना काम शुरु करता है । उसके काम से तथा विनम्र व्यवहार से सभी कर्मचारी तथा ऑफिसर खुश होते है । तीन महिने में सतीश सभी कार्यालयीन कामों को गतिशील बनाता है और सभी कार्यालयीन गतिविधीयों को सफलता के शिखर पर पहुँचा देता है । जिससे कुछ माह बाद सतीश और मि. सूरी घनिष्ठ मित्र बन जाते है । एक दिन बातों-बातों में सतीश अपंग तथा मूक-बधीर बच्चों के लिए मर्सी शेल्टर जैसा संस्थान बनवाने की अपनी इच्छा सूरी के सामने प्रस्तुत करता है । उसकी इस बात पर सूरी बहुत खूश हो कर

बाजोरिया ट्रस्ट की मीटिंग में विस्तार से कहने का अवसर भी देते है और सतीश की इस योजना का बाजोरिया सेठ खुशी से स्वीकार करते है । सतीश की मूक-बधीर बच्चों की संस्था निमार्ण करने की कल्पना को मूर्त स्वरुप देने के साथ सतीश को ही इस संस्था का संस्थापक भी घोषित करते है । सतीश की 'मूक प्राणी सेवा सदन' संस्था को अतिशीघ्र निर्माण करने के लिए सभी प्रकार के सहयोग के साथ ही उसके यशप्राप्ती की कामना भी करते है ।

कुछ महिनों के अविरत श्रम के बाद 'मूक प्राणी सेवा सदन' संस्था मूर्त रुप में उभरने लगती है सभी आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद संस्था के उद्घाटन की तिथि तय की जाती है । उद्घाटक के रुप में मर्सी शेल्टर के संस्थापक फादर थोरोमन को आमंत्रित किया जाता है । इस संस्था के कारण ही सतीश के जीवन को नया मोड़ मिल जाता है ।

एक दिन सतीश का परम दोस्त राकेश सतीश से मिलने आता हैं इधर-उधर की बातों के बाद सतीश बीना की शादी के बारें में पूछता है, तो राकेश उसे बताता है कि लड़के वालों ने शादी से इन्कार किया है । लड़का बीना से शादी नहीं करना चाहता । यह सुनकर सतीश हक्का -बक्का रह जाता है लेकिन सच तो लड़केवालों ने दहेज के लिए शादी से इन्कार किया है मगर सारा दोष बीना को दिया है । उन्हे लगता है सतीश से बीना प्यार करती है और बीना के माँ बाप का जो सतीश के प्रति लगाव है उसका उन्होंने गलत अर्थ लगाया है । सतीश इस घटना पर अफसोस जताता है लेकिन राकेश इसे खुशकिस्मती कहता है । वह कहता है— "अब इसको लेकर मरा तो नहीं जा सकता । बस इसका शुभपक्ष यहीं है कि यह आरोप शादी से पहले लगाकर उन्होंने अपने दिल का कालापन उजागर कर दिया । सोचो! अगर यह तोहमत लगाने का काम उन्होंने शादी के बाद किया होता तो हम लोग तो उजड़ ही जाते ।"[26]

सतीश को अपनी वजह से बीना की शादी टूट गयी इसका बहुत दु:ख होता है । वह अपने आप को धिक्कारता है यह देख राकेश उसे कहता है कि लड़केवाले परिचित होने के कारण दहेज नहीं मांग सकते थे इसीलिए गलत तोहमत लगाकर उन्होंने रिश्ता तोड़ा है । इसी वजह से राकेश को रिश्ता टूटने का कोई अफसोस नहीं है और न ही दर्द । राकेश दहेज के नाम पर अपनी बहन को बेचना नहीं चाहता ।

राकेश सतीश को ही बीना से शादी करने को कहता है । बीना से शादी करने खयाल से ही सतीश रोमांचित हो जाता है । सतीश को बीना से शादी करने के लिए तैयार देखकर राकेश उसको शीघ्र ही दिल्ली चलने की जिद करके कहता है— "मेरी नजर में तेरे जैसे

मूक प्राणी की सेवा करने के लिए भी कोई होना चाहिए । उसी की व्यवस्था करनी है मुझे और इसीलिए तुझे साथ ले जाना है ।"[27] दूसरे दिन सतीश सूरी साहब से दिल्ली जाने की इजाजत लेता है । सूरी को सतीश के विवाह की खबर पता चलती है तो, वे सतीश को शुभेच्छा देते है और मूक-प्राणी सेवासदन के उद्‌घाटन के कार्यक्रम की याद दिलाते हैं ।

राकेश और सतीश दिल्ली पहुँचते है । घर जाने के बाद सतीश को बीना का उदास चेहरा दिखाई देता है । रात को राकेश माँ और पिताजी से सतीश और बीना की शादी की बात करता है । वे दोनों इस शादी से खुश नहीं है लेकिन बीना सतीश को शादी के लिए 'हाँ' कहती है । बीना भी पहली बार अपना प्रेम प्रकट करते हुए सतीश के साथ हर हालत में रहने का विश्वास जताती है । बीना का प्यार देखकर सतीश फूले नहीं समाता और बीना को आलिंगन में आबध्द कर देता है । सतीश की प्राईवेट नौकरी के कारण बीना की माँ और बाबूजी चिंतित है । रात को सतीश और राकेश घुमने जाते है तो राकेश सतीश से कहता है कि कल ही आर्य समाज मंदिर में जा कर शादी करनी है । दूसरे दिन राकेश, बीना और सतीश को किसी काम के बहाने घर से आर्य समाज मंदिर में ले जा कर दोनों की शादी करा देता है । शादी के तुरंत बाद राकेश उन दोनों को जमुनानगरवाली ट्रेन से विदा करता है । जमुनानगर में सतीश और बीना का स्वागत किया जाता है । सतीश बीना को ले कर सूरी साहब यहाँ और शर्माजी के यहाँ जाता है, वहाँ से वे उद्‌घाटन समारोह में जाते हैं । सतीश, बीना की सबसे पहचान करा देता है। उद्‌घाटन समारोह के बाद वे दोनों फादर थोरोमन से आशिर्वाद से लेते हैं ।

कार्यक्रम के खत्म होने के बाद सतीश बीना को अपने निवास-स्थान ले जाता है जो पहले से ही ऑफिस के कर्मचारियों द्‌वारा जीवनावश्यक चीजों से सजाया है । यह देख बीना आश्चर्य से कहती है— "यह तो एकदम खुल जा सिम-सिम वाला जादुई मामला लग रहा है ।"[28] इस तरह आश्चर्य की भावमुद्र में खडी बीना को आलिंगन में ले कर सतीश कहता है— "यह तुम्हारे चरणों का चमत्कार ही समझों कि मैं यह चमत्कार देख रहा हूँ वर्ना मैं तो यहाँ पिछले कई महिनों से एक मामूली कमरें में बैठा तारे गिनता था ।"[29]

उपन्यास के अंत में लेखक ने सतीश के साथ-साथ बीना को भी अपना संपूर्ण जीवन अपंगो की ही सेवा करने के लिए समर्पित करते दिखाया है । यहाँ सेवाभावी प्रवृत्ति की आवश्यकता पर लेखक ने बल दिया है । बाबा आमटे ने जिस प्रकार सेवाभावी प्रवृत्ति से समाज के उपेक्षित कोडियों के लिए 'आंनदवन' की स्थापना की है, इसकी यहाँ याद आती है ।

निष्कर्ष

से.रा.यात्री लिखित 'सुबह की तलाश' यह उपन्यास काफी सफल है । उपन्यास के शीर्षक से ही उपन्यास का कथ्य थोडी मात्रा में पाठकों के समझ में आता है । इस उपन्यास में नायक की विभिन्न परिस्थितियों में हुई मानसिक स्थिति का विवरण के साथ चित्रण प्रस्तुत किया है । उपन्यास का नायक उच्चशिक्षित होने के बावजूद भी बेकार होने के कारण उसकी मनोदशा का यथार्थ चित्रण यहाँ देखने को मिलता है । घटनाओं की विविधता में उसके आवेश, विवशता को यात्री ने दिखाया है ।

यात्री ने इस उपन्यास में आज के वर्तमानकाल के युवक की मनोदशा का हु-ब-हु वर्णन किया है । उपन्यास पढ़ते समय पाठको के मन में कहीं यह कहानी अपनी तो नहीं ? यह सवाल पैदा होता है ।

मनुष्य जीवन को यथार्थ रुप में अभिव्यक्त करने की यात्री की अपनी शैली है । इस उपन्यास के अंत में उपन्यास का नायक हर समस्या का मुकाबला करके अपनी ईमानदारी से समाज में उंचा स्थान पाता है । अपने पाँव पर खडे होने के बाद समाज में अपंग व्यक्तियों के लिए सेवासदन का निमार्ण करके उन्हें सहरा देकर नई जिंदगी देता है । इससे नायक के अंतर्मन के ममत्त्व, सहिष्णूता, आस्था, प्रेम आदि गुणों के दर्शन होते है ।

उपन्यास का नायक अपने जीवन में कामयाबी पाने के लिए कडा संघर्ष करके अपने अखंड परिश्रम से अपने उज्वल भविष्य की 'सुबह की तलाश' करता है । यात्री का उपन्यास वास्तव जीवन ज्यों-का-त्यों चित्रित करनें में सफल हुआ है । नायक गतिशील और दृढ निश्चर्या है । उसके जीवन की यात्रा समाज सेवा का केंद्र बन जाती है । उसने अपने व्यक्तित्त्व को खुद के लिए नहीं बल्कि समाज के लिए विकसित किया है । वह 'दहेज' जैसी सामाजिक समस्या का भी समाधान करके अपनी उदारता का परिचय देता है । इस उपन्यास में बेरोजगारी, आवास की कमी, दहेज प्रथा आदि कई समस्याएँ उभरी है । यहाँ नारी चेतना भी उभर उठी है । भारतीय समाज व्यवस्था में लडकी दिखाने की प्रथा हैं । विवाह तय करने के पहले लडकी की पसंद को अधिक महत्व नहीं दिया जाता है । लडके के पसंदगी को ही अग्रणी माना जाता है । यहाँ पुरुष-प्रधान संस्कृति के प्रभाव पर व्यंग्य भी किया है । यहाँ कथात्मक, आत्मकथानत्मक, टेलिफोन शैली के दर्शन होते है । कथावस्तु देहरादून, दिल्ली, चंदीगड, जमुनानगर जैसे स्थानों पर विकसित होती है । उपन्यास की भाषा पात्रानुकूल और पात्रों की मानसिकता को उजागर करनेवाली है । नायक-नायिका परिवर्तनवादी युग की देन लगते है । भाषा-शैली की दृष्टि से उपन्यास सफल हैं ।

कथावस्तु की दृष्टि से यात्रीजी के तीनों उपन्यास (दराजों में बंद दस्तावेज, बीच की दरार, सुबह की तलाश) अत्यंत उत्कृष्ठ हैं । सुसुत्रताबध्द कथावस्तु का श्रेष्ठ उदाहरण 'दराजों में बंद दस्तावेज' और 'बीच की दरार' यह उपन्यास है । 'सुबह की तलाश' इस उपन्यास की मूल कथावस्तु अधिक प्रगल्भ नहीं बन पायी है । अपने लक्ष्य से प्रेरित बेरोज़गार युवक की जो हालत हुई है, उसका उतनी समर्थता से चित्रण नहीं हो पाया हैं ।

'सुबह की तलाश' का नायक सतीश कथावस्तु का केंद्रिय पात्र है । सतीश द्वारा नौकरी की प्राप्ति के लिए किया गया संघर्ष, नौकरी पाते वक्त आनेवाली समस्या आदि का उतना सशक्त चित्रण कथावस्तु में नहीं हुआ हैं । खुद अपने पैरों पर खडा न होनेवाला सतीश सिर्फ दुसरों के कहने पर मूक-बधिरों की सेवा करने के लिए अपना जीवन समार्पित करता यह बात उचित नहीं लगती । सतीश को ऐसा क्यों लगता है ? उसके सामने कौन-सा आदर्श है ? इसका चित्रण कहीं भी नहीं मिलता इससे उपन्यास की कथावस्तु बिखरी हुई लगती है ।

बेरोजगारी, प्रेमकहानी की ध्येयवाद इनमें से कौन-सा मुद्दा अधिक महत्व का है इस उलझन में उपन्यास का लेखन काफ़ी दुर्बल हो जाता है इसी कारण 'सुबह की तलाश' इस शीर्षक की कथावस्तु दुबली लगती है ।

'बीच की दरार' उपन्यास की कथावस्तु एक पत्रकार के माध्यम से स्पष्ट करते हुए आज आपसी रिश्तों में जो दरारें निर्माण हुई दिखाई देती है इसका चित्रण यात्री ने वास्तविकता से प्रामाणिक रहकर किया है । नारी को जो आज सिर्फ दिखाने की गुडिया समझकर व्यवहार करनेवाली, पुरुष-प्रधान संस्कृति का वास्तव रुप अंत्यत सचाई के साथ लेखक ने इस उपन्यास में चित्रित किया हैं । 'नीना' और 'नागपाल' इन पती-पत्नि के रिश्तों में जो ढोंग, प्यार का दिखावा है उसकी अभिव्यक्ति मि. मलिक जैसे रिपोर्टर द्वारा की है । पांरपरिक कथावस्तु की शैली के बजाय एक नये शैली से इस उपन्यास की कथावस्तु पाठकों के संमुख आती हैं । इस उपन्यास की कथावस्तु में पाठकों के मन को लुभाने की शक्ति है । यात्री को जो सवाल या समाज की परिस्थिति पाठकों के संमुख उपस्थित करनी है, उसमें यात्री सफल हुए है ।

पाठकों को उपन्यास की कोई भी घटना समाज का वास्तव रुप है यह विश्वास दिलाने की कला यात्री को ज्ञात हैं । इसी का उदाहरण है 'दराजों में बंद दस्तावेज' इस उपन्यास की शुरुआत एक नया अविष्कार है, जिससे पाठकों को यह किसी वास्तव जीवन की कहानी लगती है । परिस्थिति की वजह से कॉलगर्ल हुई युवती का दु:ख तथा उसकी

मानसिक कुंठा का चित्रण करते वक्त यात्री ने कहीं भी अतिशयोक्ती, अश्लिलता, बीभत्सता का सहारा नहीं लिया है ।

'करुणा' परिस्थितियों की वजह से कॉलगर्ल बनी युवती सुशिक्षित किंतु असहाय है । आम नारी की तरह जीवन जीने की इच्छा होते हुए भी उसे लगता है कि वह 'अपवित्र' है । इसी कारण से करुणा अपने सपनों को वास्तव रुप में लाने से घबराती है । यात्री करुणा का पात्र पाठकों के समक्ष चित्रित करते वक्त स्वयं लेखक के नाते कथावस्तु के आधार से उसे (करुणा) दया, सहानुभूति दिखाते नहीं बल्कि वास्तव वास्तव ही होता हैं, इस नजरिये से 'दराजो में बंद दस्तावेज' की कथावस्तु को आगे बढ़ाते हैं ।

तीनों उपन्यासो की कथावस्तु का अध्ययन करते वक्त तीनों की कथावस्तु किसी-न-किसी सवालों से अपना संबंध स्पष्ट करती है । खासतौर पर नारी के दु:ख को ही ये उपन्यास व्यक्त करतें है । उदाहरणार्थ - बीना, नीना, करुणा यें तीनों प्रमुख पात्र है । इन नारी पात्रों को केंद्रबिंदू बनाकर ही पूरे उपन्यास की कथावस्तु इन्हीं पात्रों के इर्द-गिर्द घुमती है ।

इन उपन्यासों में जीवन की जटीलता, विसंगति के साथ-साथ सामाजिक, पारीवारिक समस्याओं को व्यक्त करते समय यात्री की कलम ने कहीं भी कसर नहीं छोड़ी है । मसलन विषय और आशय से परिपूर्ण कथावस्तु इन तीनों उपन्यासों को मिली है यह बात विशेष उल्लेखनीय है ।

हमने इस लघु - शोध प्रबंध में से.रा. यात्री के तीन उपन्यास चुने है, जो विषयों की दृष्टि से विभिन्न हैं । 'दराजों में बंद दस्तावेज' में एक निरीह प्राध्यापक की प्रेम कहानी चित्रित हैं, जिस प्रेम का अंत दु:खान्त होता है । 'बीच की दरार' में फिल्मी दुनिया की चकाचौंध में संचार करनेवाले दांम्पत्य जीवन के तान-तनाव की स्थिति स्पष्ट की है, तो तिसरे उपन्यास में एक बेकार युवक की सेवाभावी प्रवृत्ति को प्रकाश में लाने का काम लेखक ने किया है । इन तीन अलग-अलग विषयो पर लिखे गये उपन्यासों में कॉलगर्ल, दहेज प्रथा, पारिवारिक टूटनशीलता, दांपत्य जीवन के तान-तनाव, युवको को त्रस्त करनेवाली बेकारी आदि महत्त्वपूर्ण सामाजिक समस्याओं का चित्रण किया है । इन उपन्यासों में लेखक की प्रचारात्मक प्रवृत्ति उभर कर आयी हैं । पात्र के विविध परिवेशों में, विविध परिस्थितियों में, विविध सामाजिक स्तरों पर पले होने के कारण उनकी प्रवृत्तियों में विभिन्नताओं के दर्शन होते हैं । सामाजिक उपभोक्तावादी संस्कृति ने अपनी सुविधा के लिए कई सामाजिक प्रवृत्तियों का निमार्ण किया हे, 'कॉलगर्ल' इनमें से एक प्रवृत्ति है । पात्रों को नियोजन निमित्त

मात्र करने पर भी पात्र सशक्त ढंग से सामाजिक यथार्थ पर प्रकाश डालते हैं । इन उपन्यासों की विशेषता यह है कि पात्रों की संख्या कम हैं । हर पात्र अपने साथ अपनी-अपनी घटनाओं को वहन करते हुए कथावस्तु के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान निभाते हैं । वातावरण की दृष्टि से भी इन उपन्यासों में विविधता के दर्शन होते हैं । मसूरी, चंदीगड, दिल्ली, देहराहून, जमुनानगर आदि कई स्थानों के चित्रणों को वातावरण के रुप में ढालकर से.रा. यात्री ने वहाँ की स्थानीयता से पाठकों को परिचित कराया हैं ।

भाषा की दृष्टि से और शैली की दृष्टि से भी इन उपन्यासों में विविधता है । शुद्ध सहित्यिक, खडी बोली, हिंदी के साथ ही साथ भाषा में अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दु, अरबी, फारसी शब्द आयें हैं । पात्रानुकूल और परिवेशानुकूल भाषा हैं । आत्मकथनात्मक, शैली, वर्णनात्मक शैली, विवरणात्मक शैली, टेलिफोन शैली, पूर्व-दीप्ति शैली आदि कई शैलियों के दर्शन भी यहाँ होते हैं । यें तीनों उपन्यास आशय, विषय की दृष्टि से चिंतनयोग्य लगते हैं ।

संदर्भ सूची :-

1) यात्री से.रा. - दराजों में बंद दस्तावेज - अमित प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.सं 1969 पृ.13

2) वही - पृ.21

3) वही - पृ.38

4) वही - पृ.91

5) वही - पृ.99

6) वही - पृ.105

7) डॉ.हिरे एम्.बी. - कथाकार से.रा.यात्री : व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व-अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर प्र.सं. 1993 पृ.181.

8) वही - पृ.181.

9) डॉ. गुप्त शांतिस्वरुप - उपन्यास स्वरुप, संरचना तथा शिल्प - अलंकार प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 1980 पृ.30

10) यात्री से.रा. - बीच की दरार - भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 1978 पृ.9

11) डॉ.हिरे एम्.बी. - कथाकार से.रा.यात्री : व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व-अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर प्र.सं. 1993 पृ.182,183.

12) वही -पृ.184.

13) वही -पृ.184.

14) वही - पृ.185.

15) यात्री से.रा. - बीच की दरार - भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 1978 पृ.88.

16) डॉ.हिरे एम्.बी. - कथाकार से.रा.यात्री : व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व-अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर प्र.सं. 1993 पृ.182.

17) यात्री से.रा. - सुबह की तलाश - आत्माराम एंण्ड सन्स, दिल्ली, प्र.सं 1994 पृ.11,12

18) वही - पृ.22

19) वही - पृ.29

20) वही - पृ.66, 67

21) वही - पृ.77

22) वही - पृ.86

23) वही - पृ.99

24) वही - पृ.105

25) वही - पृ.107

26) वही - पृ.119

27) वही - पृ.123

28) वही - पृ.175

29) वही - पृ.175